भारत में तुर्क सत्ता की स्थापना

कुतुबुद्दीन ऐबक एवं इल्तुतमिश

भाग - 3

B. A - III (Hons), History, Paper - V

BY

Dr. Md. Neyaz Hussain
Associate Prof. & Head
PG Dept. of History
Maharaja College,
VKSU, ARA (BIHAR)

Scanned with CamScanner

इल्तुतमिश (1211 - 1236)

दिल्ली सल्तनत के आरंभिक इतिहास में जो शासक सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, वह इल्तुतमिश है। उसने अत्यंत विषम परिस्थितियों में दिल्ली सल्तनत का राज्य प्राप्त किया परंतु अपनी योग्यता और प्रतिभा से उसने इन समस्याओं का अंत किया और सल्तनत को सुदृढ़ता और शक्ति प्रदान की। अनेक इतिहासकार उसे ही दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक मानते हैं।

इल्तुतमिश के आरंभिक जीवन की जानकारी सीमित है। वह इलबरी जनजाति का तुर्क था, और उसका पिता इलम खाँ एक कबायली सरदार था। उसके ईर्ष्यालु भाई ने बचपन में ही उसे दास बनाकर बेच दिया था।

Scanned with CamScanner

कई मालिकों के अधीन रहने के बाद इल्तुतमिश को ऐबक ने खरीद लिया था। चूँकि वह एक योग्य सेनानायक और सक्षम व्यक्ति था, इसीलिए उसे जल्दी ही पदोन्नति मिली। 1200 ई० में मोहम्मद ग़ोरी द्वारा ग्वालियर की विजय के बाद इल्तुतमिश को उसे नगर का अमीर अथवा प्रधान बनाया गया। 1205-06 में ग़ोरी के अंतिम अभियान के समय इल्तुतमिश ने अद्वितीय साहस का परिचय दिया और इससे प्रसन्न होकर ग़ोरी ने ऐबक को उसे दासता से मुक्त करने का आदेश दिया। ऐबक ने इल्तुतमिश को अपनी दासता से मुक्त किया, बल्कि अपनी एक पुत्री का विवाह उससे कर दिया और उसे नहरों का शासक नियुक्त कर दिया। 1210 ई० में जब ऐबक की मृत्यु हुई और लाहौर में आरामशाह को शासक घोषित किया गया तो इल्तुतमिश को सामंतों के एक वर्ग

में सत्ता पर अधिकार करने का निमंत्रण दिया। इल्तुतमिश ने लाहौर पर चढ़ाई कर आरामशाह को पराजित किया और सत्ता पर अधिकार कर लिया।

इल्तुतमिश के 26 वर्ष के शासनकाल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :

(1) 1210 – 1220 ई० तक उसने अपने विरोधियों का दमन किया

(2) 1221 – 1227 ई० तक उसे मंगोल आक्रमण के खतरे का सामना करना पड़ा

(3) 1228 – 1236 तक जब वह अपनी व्यक्तिगत और वंशीय सत्ता के संगठन के लिये कार्य करता रहा।

इल्तुतमिश की प्रारंभिक समस्याएँ आंतरिक और वैदेशिक, दोनों ही कठिन थीं। इस समय तीन शक्तिशाली प्रतिद्वंदी थे जिनसे इल्तुतमिश को अपने संबंध निश्चित करने

Scanned with CamScanner

(15)

थे – ग़ज़नी में यल्दूज़, सिंध में कुबाचा और लखनौती में अलीमर्दान। यदि इल्तुतमिश, उनकी सत्ता को स्वीकार करता तो वह उसकी सल्तनत के लिए विनाशकारी सिद्ध होता। अतः उनका विनाश करना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त उसे उन स्वतंत्र राज्यों पर अधिकार करना था जो हिंदू शासकों के अधीन थे, जैसे जालौर और रणथंभौर।

प्रथम काल (1210–1220 ई०) : इस काल में इल्तुतमिश को यल्दूज़ और कुबाचा के साथ संघर्ष करना पड़ा। ख़्वारिज़्मियों द्वारा ग़ज़नी से खदेड़े जाने पर यल्दूज ने लाहौर पर अधिकार कर लिया। कुबाचा को वहाँ से भागना पड़ा। पंजाब और थानेश्वर पर भी यल्दूज ने अधिकार कर लिया। तराइन के मैदान

में जो युद्ध हुआ (1215-1216) उसमें इल्तुतमिश ने यल्दुज को पराजित कर दिया। इसामी के अनुसार वह हाँसी भाग गया और बंदी बनाया गया। यह सही नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि हसन निज़ामी के अनुसार उसे घायल होने पर बंदी बनाया गया। इसके बाद उसे बदायूँ ले जाया गया जहाँ उसकी हत्या कर दी गई। के०ए० निज़ामी के अनुसार " इल्तुतमिश के लिये यह दोहरी विजय थी: उसकी सत्ता को ललकारने वाले सबसे भयंकर शत्रु का विनाश और ग़ज़नी से अंतिम रूप से संबंध-विच्छेद जिसके फलस्वरूप दिल्ली का स्वतंत्र अस्तित्व निश्चित हो गया। "

कुबाचा की बढ़ती हुई महत्वकांक्षाएँ

इल्तुतमिश के लिए चिंता का कारण थी। उसे लाहौर पर शासन का अधिकार दिया गया था, पर वह सरहिंद पर अधिकार करने का इच्छुक था। अतः 1217 ई० में इल्तुतमिश, कुबाचा का विरुद्ध बढ़ा, पर वह भाग खड़ा हुआ। कुबाचा को पीछा करके उसे पराजित किया गया, पर उसे पूरी तरह कुचला नहीं जा सका, क्योंकि जलालुद्दीन मँगबरनी के भारत आने से इल्तुतमिश के लिये नई समस्या उठ खड़ी हुई और उसे वापस आना पड़ा। लाहौर पर उसने अपने पुत्र नासिरुद्दीन महमूद को नियुक्त किया।

द्वितीय काल (1221-1227 ई०): चंगेज खाँ के प्रकोप से बचने के लिये ख्वारज्म शाह

का पुत्र जलालुद्दीन मँगबरनी सिंधु घाटी पहुँचा। संभवतः चंगेज़ खाँ ने इल्तुतमिश के पास अपने दूत भेजे थे कि वह मँगबरनी की सहायता न करें। इल्तुतमिश भी सावधान था कि मंगोलों से शत्रुता मोल न लेनी पड़े। अतः उसने मँगबरनी की कोई सहायता नहीं की और जब 1228 ई० में मँगबरनी भारत से चला गया तो इस समस्या का समाधान हो गया।

तृतीय काल (1228-1236 ई०) : अब इल्तुतमिश को अपनी विजय और संगठन की योजनाओं की ओर ध्यान देने का समय मिला। बंगाल में अलीमर्दान ने अपनी सत्ता स्थापित की थी, पर उसकी हत्या कर दी गई। 1211 ई० में हुसामुद्दीन एवज खलजी को उस पद पर बिठाया गया। वह एक स्वतंत्र

शासक बन गया और उसने सुल्तान गयासुद्दीन का खिताब धारण किया। उसने बिहार में अपनी शक्ति का प्रसार किया और जाजनगर, तिरहुत, बंग और कामरूप के राज्यों से खिराज वसूल किया। जब 1225 ई० में इल्तुतमिश ने बंगाल की ओर कूच किया तो उसने दिल्ली की अधीनता स्वीकार कर ली और भारी हर्जाना दिया। किन्तु इल्तुतमिश के वापस लौटते ही उसने मालिक जानी को पराजित कर दिया जिसे इल्तुतमिश ने बंगाल का मुक्ता नियुक्त किया था। वह फिर स्वतंत्र शासक बन गया। इल्तुतमिश के पुत्र नासिरुद्दीन महमूद ने उसे पराजित किया और वह मारा गया। बाद में नासिरुद्दीन महमूद को लखनौती का मुक्ता नियुक्त किया गया।

Scanned with CamScanner

1226 ई० में रणथंभौर और 1227 ई० में मंडोर दुर्ग पर इल्तुतमिश ने विजय प्राप्त की। इसके बाद वह कुबाचा के विरुद्ध बढ़ा। भटिंडा, सुरसुती और लाहौर पर अधिकार करने के बाद वह उच्छ की ओर बढ़ा। कुबाचा भागकर मकरान पहुँचा और उसने अपने पुत्र अलाउद्दीन बहराम को संधि का प्रस्ताव करने के लिए इल्तुतमिश के पास भेजा। इल्तुतमिश ने बिना शर्त समर्पण की माँग की परंतु कुबाचा ने सिंधु नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली। इल्तुतमिश ने सिंध और पंजाब में अपनी शक्ति स्थापित की और बारह सामरिक महत्व के दुर्गों को जीतकर मकरान तक अपनी सत्ता की स्थापना की।

18 फरवरी, 1229 ई० को बगदाद के खलीफा के राजदूत दिल्ली आए और उन्होंने इल्तुतमिश के सम्मान में अभिषेक का

Scanned with CamScanner

प्रदान किया। यह मात्र एक औपचारिकता थी जिसके द्वारा खलीफा ने दिल्ली सल्तनत की स्वतंत्र स्थिति को मान्यता प्रदान की। इस वैधानिक स्वीकृति से इल्तुतमिश की प्रतिष्ठा अधिक ऊंची हो गई और उसको एक दीर्घकालीन अभिलाषा भी पूरी हुई।

आंतरिक प्रशासन के क्षेत्र में इल्तुतमिश का योगदान इक्तादारी प्रथा का विकास था। उसने अपने राज्य को अनेक छोटे-बड़े भू-खण्डों में विभक्त कर दिया, जिन्हें इक्ता कहते थे। इनके अधिकारी इक्तादार कहलाते थे। बड़े क्षेत्रों के इक्तादार प्रांतीय गवर्नर के रूप में थे, जो कानून एवं व्यवस्था की देखरेख, लगान की वसूली, मुकदमों की सुनवाई और सैनिक सेवा प्रदान करने का काम करते थे। छोटे-क्षेत्रों के इक्तादार,

Scanned with CamScanner

केवल सैनिक सेवा प्रदान करते थे। दोनों श्रेणियों के इक्तादारों को वेतन के रूप में अपने इक्ता से वसूल किये गए लगान पर अधिकार प्राप्त था। इल्तुतमिश ने इस व्यवस्था का उपयोग उत्तर भारत की सामंतवादी प्रथा का अंत करने एवं केन्द्रीय प्रशासन को मजबूत बनाने के लिये किया। सामंतवादी प्रथा के विपरीत इल्तुतमिश ने समय-समय पर इक्तादारों का स्थानांतरण करके उन्हें केन्द्रीय प्रशासन के नियंत्रण में रखने का सफल प्रयास किया। इसके अतिरिक्त जिन राजपूत शासकों ने दिल्ली सल्तनत की अधीनता स्वीकार कर ली थी, उन्हें भी नजराना देने के बदले में उनके राज्य लौटा दिये गए।

इल्तुतमिश ने अरबी प्रथा के आधार

Scanned with CamScanner

पर एक नई मुद्रा प्रणाली भारत में लागू की। इसमें ताम्बे के सिक्के अथवा जीतल और चाँदी के सिक्कों अथवा टंकों का प्रचलन हुआ। इन सिक्कों पर इल्तुतमिश का नाम अरबी लिपि में अंकित था। इन नए सिक्कों का प्रचलन भारत में तुर्कों की सत्ता की सुदृढ़ता का प्रतीक थी।

इल्तुतमिश के अधीन एक केन्द्रीय सेना (central Army) का प्रमाण नहीं मिलता। उसने शाही अंगरक्षकों अथवा जानदारों का एक दल बनाया था। आगे चलकर बलबन ने इसी आधार शीला पर सैन्य संगठन का निर्माण किया।

इल्तुतमिश विजेता और प्रशासक के रूप में महान तो था ही वह कला और संस्कृति का पोषक भी था। उसके समय में

दिल्ली का नगर एक प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ, जहाँ मध्य-एशिया से आने वाले शरणार्थी, कलाकारों, शिल्पकारों और विद्वानों को प्रश्रय मिला। इल्तुतमिश के दरबार में प्रसिद्ध इतिहासकार मिनहाज-सिराज को प्रश्रय मिला जिसकी रचना तबक़ात-नासिरी से भारत में तुर्की शासन के निर्माण और आरम्भिक इतिहास का पता चलता है। प्रसिद्ध विद्वान जुनैदी को इल्तुतमिश ने अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। मध्य एशिया से आने वाले मज़दूरों के योगदान से इल्तुतमिश ने अनेक भव्य इमारतों का निर्माण कराया, जिनमें कुतुबमीनार, राजकुमार महमूद और इल्तुतमिश के मकबरे और शम्सी मदरसा आज भी देखे जा सकते हैं।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि उत्तर भारत में तुर्कों की सत्ता के विकास में इल्तुतमिश का उल्लेखनीय योगदान है। उसने नवजात दिल्ली सल्तनत को न केवल विघटन से बचाया बल्कि उसे एक सुदृढ़ अस्तित्व प्रदान किया और उसके क्षेत्रों का विस्तार किया। उसने मंगोल आक्रमण के भीषण संकट से दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित रखा जबकि मध्य-एशिया में प्रायः सारे मुस्लिम शासक और राज्य मंगोलों के आगे नतमस्तक हो चुके थे। उसने दिल्ली सल्तनत की स्वतन्त्रता को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता उपलब्ध कराई और उसके लिये एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण किया। एबक द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना का जो काम अधूरा छूटा था, उसे इल्तुतमिश ने ही पूरा किया। के० ए० निजामी के

Scanned with CamScanner

शब्दों में " ऐबक ने दिल्ली सल्तनत की रूपरेखा के बारे में सिर्फ दिमागी खाका बनाया था, इल्तुतमिश ने उसे एक व्यक्तित्व, एक पद, एक प्रेरणा-शक्ति, एक दिशा, एक शासन व्यवस्था और एक शासक वर्ग प्रदान किया।" आर० पी० त्रिपाठी का भी मत है कि "भारतवर्ष में मुस्लिम प्रभुसत्ता का वास्तविक श्रीगणेश उसी से होता है।"

——— × ——— × ———

Scanned with CamScanner